स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

अन्तर्गत

पीएच.डी. (हिंदी)अनुसंधान हेतु

शोधकार्य का प्रारुप

शोधकार्य का शीर्षक

"चंद्रसेन विराट की ग़ज़लो में प्रासंगिकता"

शोधकर्ता

महेंद्रकुमार निवृत्तीराव कांबळे

शोध निर्देशक

डॉ.भगवान एन.जाधव

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र

पीपल्स कॉलेज नांदेड

चंद्रसेन विराट की गजलो में प्रासंगीकता

प्रस्तावना

ग़ज़ल सदैव से ही एक लोकप्रिय विधा रही है। हिंदी काव्य जगत में ग़ज़ल में आज अपनी अतिविशिष्ट पहचान बचाई है। हिंदी ग़ज़लकारों ने आपनी ग़ज़लो के माध्यम से इसे बखुबी सिद्ध कर दिया है। हिंदी ग़ज़लों ने उर्दु से रदीफ, काफिया, मतला, शेर मक्ता आदि आवश्य लिया है। लेकिन मुहावरे शब्द और संस्कार हिंदी के आपने है। वैसे उर्दु ग़ज़लों दो प्रेमीयों की बिच बातचित को ही केंद्र मे रखकर उसका उद्भव और विकास हुआ है। लेकिन हिंदी ग़ज़लों ने आपने दम पर आपनी अलग पहेचान और मिसाल बना ली है। महफिलों और मुशायरों से बाहर निकलकर इसने व्यक्ती, समाज, निती, राष्ट्र, धर्म, संस्कार, विवशता, विद्रोह, घुटन, राजनिती परिवर्तन और मानविय मुल्य आदि सभी को आपने आप में समाते हुए मानवता धर्म को निभा रही है।

हिंदी ग़ज़ल को जनमानस तक पहुँचाने में प्रसिद्ध गजलकार दुष्यंत कुमार का बड़ा योगदान रहा लेकिन अधुनिक हिंदी ग़ज़लों कि वृद्धी में ग़ज़लकार चंद्रसेन विराट नें महत्वपुर्ण भुमिका अदा कि है। उन्होंने हिंदी ग़ज़ल को नई पहेचान नया तेवर प्रदान किया है। उनके ग़ज़लों कि मुल भावना आज के मनुष्य कि समस्याए, कटुता एवं संघर्ष से गुजरते आज के जीवन कि आवाज है। उनकी अबतक 13 ग़ज़ल संग्रह, 15 गीत संग्रह, 5 मुक्तक संग्रह और 4 दोहा संग्रह प्रकाशित हो चुके है। जीवन का शाद हि कोई अंग उनकी ग़ज़लों से छुटा हो।उनकी ग़ज़लों में समसामाईक बोध को यर्थाथ अभिव्यक्ती मिली है। ऐसे महान ग़ज़लकार के ग़ज़लों पर अनुसंधान कार्य होना सामाजीक और साहित्यीक दृष्टि से महत्वपुर्ण है।

विषय चयन की प्रेरणा :-

महाविद्यालयीन जीवन में विविध सांस्कृतिक प्रतियोगीता और कार्यक्रमों के कारण मेरा ग़ज़ल के प्रति आकर्षन बढ़ता गया और मै अधिक से अधिक ग़ज़ल और उसके इतिहास का विस्तृत रुप से अध्ययन करने लगा। हिंदी साहित्य कोश के अनुसार ग़ज़ल का अर्थ नारियों से प्रेम कि बाते करना है। ग़ज़ल हिंदी साहित्य में आने से पहीले प्रेम, संयोग और वियोग के विषयों तक हि सिमित थी मगर हिंदी ग़ज़ल ने उसे महलों और मुशायरों से बाहर निकालकर आम आदमी के दिल तक पहुँचाया। इसमें हिंदी ग़ज़लकारों का बड़ा योगदान रहा है।

ग़ज़ल कि पैदाइश फ़ारस के लोक संगीत से हुई और उसके बाद अरब, मिश्र तथा भारत में प्रसारित होती रही। फ़ारसी ग़ज़ल साहित्य कों रौदकी, सादी, सिराजी और अमीर खुसरों ने आपनी ग़ज़लों से समृद्ध किया है।उसी तरह हिंदी ग़ज़ल का भव्य महल निर्माण करने में निराला, समशेर बहाद्दुर सिंग, दुष्यंत कुमार, बलविरसिंह 'रंग' और चंद्रसेन विराट आदि का महत्वपुर्ण योगदान रहा है। चंद्रसेन विराट के समय तक हिंदी ग़ज़लें उर्दुपन कि अधिकता के कारण विकास कि इतनी सिडीया नही चढ़ सकी जितनी कि अपेक्षा थी। हिंदी ग़ज़ल के इसी अभाव को दुर करने का श्रेय चंद्रसेन विराट को जाता है। उनकी ग़ज़लें आज के जीवन कि प्रतिध्वनी है इसलिए अनुसंधान हेतु प्रस्तुत विषय का चयन किया गया है।

अनुसंधान विषय का उद्देश :-

हिंदी ग़ज़ल आज के जनजिनव को सही अभिव्यक्ति देने में सर्वाधिक सशक्त माध्यम बन गया है। यही नहीं हिंदी ग़ज़ल के रुप में संवेदना और शिल्प दोनों ही स्तरों पर हिंदी ग़ज़ल ने एक लंबी यात्रा तय कि है। आज के समाज के दर को साफ-साफ कहना और चुपके से उनके कारणों पर व्यंग भी कर जाना आज कि सफल हिंदी ग़ज़ल की सार्थकता है। चंद्रसेन विराट की ग़ज़लें कल्पना-लोक के स्थान पर यर्थाथ की जमीन पर चलना पसंद करती है। उनके ग़ज़लों में जो यर्थाथ जीवन की अनुभुती है वह आज के दौर में भी प्रासंगिक है। उसे समाज के सामने आना अत्यंत आवश्यक है। उनकी ग़ज़ल का विविध पहलुओं पर अध्ययन होना जरुरी है। प्रस्तुत अनुसंधान मे इन्ही उद्देशों के आधार पर अध्ययन किया जायेगा।

1. हिंदी ग़ज़लों के विकास में चंद्रसेन विराट का योगदान उजागर करना
2. हिंदी ग़ज़ल में चंद्रसेन विराट का स्थान उजागर करना
3. चंद्रसेन विराट के ग़ज़लों की प्रासंगीकता उजागर करना
4. चंद्रसेन विराट की ग़ज़ल में व्यक्त विविध चेतनाएँ स्पष्ट करना
5. चंद्रसेन विराट की ग़ज़लों व्यक्त विविध समस्याएँ उजागर करना
6. चंद्रसेन विराट की ग़ज़लों का भाषा शैली की दृष्टि से अध्ययन करना
7. चंद्रसेन विराट के ग़ज़लों की सार्थकता उजागर करना

अनुसंधान विषय का महत्व :-

हिंदी साहित्य में ग़ज़ल का स्थान यह अत्यंत महत्वपुर्ण है। हिंदी ग़ज़ल का सात्यि में स्थान और उसकी सार्थकता को अब कोई नकार नही सकता और हिंदी ग़ज़लों ने भी अपने उन तमाम बंधन और मर्यादा

को तोडकर जीवन के प्रत्येक पहलुओंपर अपनी सशक्त अभिव्यक्ती दी है। हिंदी ग़ज़ल का आज कोई एक विषय विशेष नही बल्की जीवन के प्रत्येक अंग प्रत्येक व्यक्ती के जीवन संघर्ष को अभिव्यक्त कर रही है। स्वातंत्र्य प्राप्ती के पश्चात देश कि औद्योगीक प्रगति के परिणाम स्वरुप महानगर विकसीत हुए परंतु इन महानगरों मे विद्रुपता पनपती चली गयी। मानवी मुल्यों का ऱ्हास होता गया आदमी आदमी से दुर हो गया इन सभी त्रासद स्थितीयों का यर्थाथ चित्रण ग़ज़लकारोंने बड़ी मार्मिकता सें किया है। चंद्रसेन विराट का स्थान अधुनिक ग़ज़लकारों में इसलिए महत्वपुर्ण माना जाता है। आज उनकी ग़ज़लों ने मनुष्य समाज को जागरुक करने का काम किया है। ऐसे महान ग़ज़लकार की रचनाओं पर अनुसंधान कार्य होना ग़ज़ल को एक नई दिशा और दृष्टी देने के बराबर होगा। प्रस्तुत अनुसंधान में इन्ही महत्वों को ध्यान में रखकर अनुसंधान कार्य किया जाऐगा।

गृहितके :-

1. चंद्रसेन विराट कि ग़ज़ल हिंदी ग़ज़ल साहित्य में आपना महत्वपुर्ण स्थान रखती है
2. चंद्रसेन विराट का हिंदी ग़ज़लों के विकास में महत्वपुर्ण योगदान रहा है
3. चंद्रसेन विराट की ग़ज़लों मे जीवन की विविध समस्याएँ देखने को मिलती है
4. चंद्रसेन विराट की ग़ज़लों मे प्रासंगिकता अत्याधिक है
5. चंद्रसेन विराट की ग़ज़ल में सम-सामायिक विषयों की अभिव्यक्ति हुई है
6. चंद्रसेन विराट की ग़ज़लों में विविध चेतनाएँ दिखाई देती है
7. चंद्रसेन विराट की ग़ज़लों ने आधुनिक हिंदी ग़ज़लों को नई पहचान दी है
8. चंद्रसेन विराट ने हिंदी ग़ज़ल के तमाम अभावों को दुर किया है

अनुसंधान विषय की पद्धती :-

आधुनिक युग में अनुसंधान का विशेष महत्व है। अनुसंधान राष्ट्र कि प्रगती का प्रतीक है। अनुसंधान द्वारा ज्ञान कि वृद्धि के साथ-साथ मानव को अत्याधिक महत्व प्राप्त करता है। आज ज्ञान का क्षेत्र इतना विस्तृत हो चुका है कि मनुष्य कि क्षमताएँ कम पड़ने लगी है। इसलिए साहित्य का विस्तृत अध्ययन करने के लिए अनुसंधान कि विविध पद्धतीयों के आधार पर उसे परखना उचित होता है। प्रस्तुत अनुसंधान यह लिखित साहित्य पर किया जा रहा है। विषय एवं उद्देशो कि दृष्टी से अनुसंधान कि निम्नलिखित पद्धतीयोंका प्रयोग किया जायेगा।

1. अलोचनात्मक शोध पद्धती
2. व्याख्यात्मक शोध पद्धती
3. मननात्मक शोध पद्धती
4. विश्लेषणात्मक शोध पद्धती

साथ ही आवश्यकतानुरुप पद्धतीयों को अपनाया जायेगा

अध्याय योजना :-

प्रस्तुत अनुसंधान के सभी अध्याय यह शोध कार्य के प्रारुप हेतु प्रस्तुत किये जा रहे है। अनुसंधान कार्य में विषय एवं उद्देशों कि दृष्टी से अध्याय योजना में उचित बदलाव किये जा सकते है।

प्रथम अध्याय : ग़ज़लः स्वरुप, परिभाषा तथा उद्‌भव एवं विकास

प्रस्तुत अनुसंधान के प्रथम अध्याय में ग़ज़ल का स्वरुप, परिभाषा तथा उद्‌भव एवं विकास आदि का विस्तृत अध्ययन किया जाऐगा। फारस के लोक संगीत से ग़ज़ल का उद्‌भव हुआ उसके बाद ग़ज़ल अरब, मिश्र तथा भारत में प्रसारित होती गयी। रौदकी से लेकर अमीर खुसरों जैसे महान गजलकारों ने इस विधा को समृद्ध किया है और हिंदी ग़ज़ल को आम आदमी तक लाने में निराला, दुष्यंत एवं चंद्रसेन विराट ने महत्वपुर्ण भुमिका अदा कि है आदि सभी का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत अध्याय में किया जायेगा।

द्वितीय अध्यायः चंद्रसेन विराट का व्यक्तित्व, कृतित्व एवं हिंदी ग़ज़ल साहित्य में योगदान

पस्तुत अनुसंधान के द्वितीय अध्याय में चंद्रसेन विराट के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं हिंदी ग़ज़ल साहित्य में योगदान पर प्रकाश डाला जायेगा। चंद्रसेन विराट का आगमन हिंदी साहित्य में कवि, गीतकार तथा ग़ज़लकार के रुप में हुआ है। आपनी बहतरीन ग़ज़लों के माध्यम से उन्होंने हिंदी ग़ज़ल को एक नई पहचान दी है1 उनकी अबतक 13 ग़ज़ल संग्रह, 15 गीतसंग्रह, 5 मुक्तक संग्रह और 4 दोहा संग्रह प्रकाशित हो चुके है। ग़ज़लकार के रुप में अस्था के अंमलतास, निर्वसना चाँदनी, धार के विपरीत, लड़ाई लम्बी है, परिवर्तन की आहट, न्याय कर मेरे समय, कचनार की टहनी, फागुन माँगे भुजपाश, इस सदी का आदमी, हमने कठिन समय देखा है, खुले तिसरी आँख, बोल, मेरी जिंदगी यह ग़ज़लसंग्रह काफी लोकप्रिय रहे है।

तृतिय अध्याय : चंद्रसेन विराट की ग़ज़लों मे प्रासंगिकता

प्रस्तुत अनुसंधान के तृतीय अध्याय मे उनकी ग़ज़लों मे व्यक्त प्रासंगिकता का अध्ययन एवं मूल्यांकन किया जाऐगा। चंद्रसेन विराट अधुनिक हिंदी ग़ज़लकारों में महत्वपुर्ण स्थान रखते है। अपनी

बहेतरीन ग़ज़लों के माध्यम से समाज के विविध प्रश्नो और समस्याओं को उजागर किया है। विराट जी ने बड़ी मार्मिकता से समाज के विविध पहेलु जैसे सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनितीक तथा सांस्कृतिक स्थितियों का चित्रण किया है। उनकी अत्याधिक ग़ज़लें यह प्रासंगिकता को ध्यान में रखकर लिखी गई है। इसी आधार पर प्रस्तु अध्याय उनकी ग़ज़लों का विस्तृत्व अध्ययन किया जाऐगा।

चतुर्थ अध्याय: चंद्रसेन विराट की ग़ज़लों में व्यक्त समस्याएँ

प्रस्तुत अनुसंधान के चतुर्थ अध्याय में चंद्रसेन विराट की ग़ज़लों में व्यक्त समस्याओं को उजागर किया जायेगा। वर्तमान युग में महानगारों मे पनपती विद्रुपता, भ्रष्टाचार, अलगाववाद, आतंकवाद, सिमावाद, भाषावाद, बेरोजगारी, भूखमरी और मानविय मूल्यों का होनेवाला पतन आदि अनेक गंभीर समस्याओं पर चंद्रसेन विराट ने अपनी कलम चलाई है। प्रस्तुत अध्याय मे इन सभी समस्याओं के आधार पर विराट के ग़ज़लों का अध्ययन किया जायेगा।

पंचम अध्याय : चंद्रसेन विराट की ग़ज़लों में भाषा एवं शिल्प

प्रस्तुत अनुसंधान के पंचम अध्याय में चंद्रसेन विराट के ग़ज़लों की भाषाशिल्प प्रतिमान और प्रतिकों का अध्ययन किया जाऐगा। चंद्रसेन विराट के समय हिंदी ग़ज़ल यह उर्दुपन की अधिकता के कारण आपना अलग स्थान सिद्ध नही कर पा रही थी ऐसे अनेक अभावों से हिंदी ग़ज़ल जुझ रही थी। ठीक इसी अभावों को चंद्रसेन विराट ने दुर किया और हिंदी ग़ज़ल को नई बुलंदियों तक पहुँचाया। आपनी ग़ज़लों में शुद्ध हिंदी का प्रयोग कर उसे सहज सरल प्रतिको और प्रतिमानों का साथ आम आमदी के दिल तक पहुँचाया हैं। प्रस्तुत अध्याय में भाषाशिल्प के सभी मापदंडों के आधार पर उनकी ग़ज़लों का अध्ययन एवं मुल्यांकन किया जाऐगा।

षष्ठम अध्याय: निष्कर्ष एवं उपसंहार

प्रस्तुत अनुसंधान के षष्ठम अध्याय में अनुसंधान का सार तत्व तथा अनुसंधान कि उपलब्धिओंको प्रस्तुत किया जाऐगा।

संदर्भ सुचि

1) हिंदी ग़ज़ल उद्‌भव और विकास

- रोहिताश्व अस्थाना

2) हिंदी ग़ज़ल का सौन्दर्यशास्त्र

- डॉ. राम प्रकाश 'पथिक'

3) हिंदी ग़ज़ल के विविध आयाम

- सरदार मुजावर

4) समकालीन हिंदी गजल : पहचान और परख

- डॉ.सयमा बानो

5) साठोत्तरी हिंदी ग़ज़ल

- डॉ. मधू खराटे

6) दुष्यंतोत्तर हिंदी ग़ज़ल

- डॉ. मधु खराटे

7) आधुनिक हिंदी कविता में गझल

- प्रा. सुश्री लता मुख

8) ग़ज़ल का काव्यशास्त्र

- डॉ. महेश गुप्ता

शोधनिर्देशक ***शोधकर्ता***

प्रा.डॉ. भगवान एन. जाधव
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं अनुसंधान केंद्र
पीपल्स कॉलेज नांदेड

महेंद्रकुमार निवृत्तीराव कांबळे